राष्ट्रीय चेतना परिवार - अभिव्यक्ति काव्य मंच

हिंदी दिवस प्रतियोगिता — काव्य संग्रह

विशेष काव्य संकलन (भाग - 1)

॥ हमारी भाषा हिंदी ॥

टी एन सी श्रीधर (१४/९/२०२५)

संस्कृत की संतान है, सारी प्यारी । भारत की भाषाएँ, है सारी न्यारी । हर प्रान्त को अपनी ही, भाषा है प्यारी । हर भारती को हिंदी ही भाषा है न्यारी। भारत की एकता का बंधन है आशा । हिंदी ही एकता का बंधन है भाषा । बंगाली, पंजाबी, गुजराती, मदरासी, आसामी, बिहारी, मारवाड़ी, मराठी । भारत में विविधता की बोली हैं सारे । विविधता में एकता की बोली, हिंदी है प्यारे । समझते हैं इस बोली को संसार में सारे । गर्व है इस बोली पर, हम सब को प्यारे । संस्कृत की संतान हैं सारी प्यारी, भारत की भाषाएँ है सारी न्यारी ।

अर्पित है हे हिन्दी

डॉ. अनुराधा के, सैंडीयागो, अमेरिका

हे माँ, गीर्वाणभारती की आत्मजा। स्वीकारे हैं तुम्हें सारे भारत की प्रजा। द्वाविंशति भाषाओं की हो तुम भगिनी। भाषाई सौहार्दता की नित पुष्करणी। स्वतंत्रता संग्राम में भी रही तुम अहं। स्वतंत्रता सेनानियों की जोड़ी तुम स्वयं। हो तुम स्वतंत्र भारत की निज गौरव वाणी। हे भारत प्रजातंत्र की संविधान मुख वाणी। कश्मीर से कन्याकुमारी तक संपर्क हेतु, भारतीय जनमानस की हो तुम भाव सेतु। हो तुम माँ भारती की भाषा मुकुट मणि। राजभाषा पीठ पर अभिषिक्त महारानी। विदेश में भी जागी है तुम से भारतीयता। तेरे माध्यम से ही बढ़ी है आत्मीयता। करें कोई तेरे साथ कितना भी विरोध। विकसित हुई हो तुम सहकर सारे अवरोध। मात्र एक दिन हिन्दी दिवस पर ही नहीं। मेरी भावाभिव्यक्ति का माध्यम तू ही सही। निश-दिन करुँगी सदा तेरी आराधना। अर्पित है हे हिन्दी, तुम्हें अनुराधा के भाव संवेदना।

राष्ट्रभाषा हिंदी का हक और अधिकार

आशा मेहता अधिकारी

हिंदी भाषा से है मुझे ख़ास लगाव, हिंदी भाषा ही मेरा बोलचाल, हिंदी ही मेरा अभिमान। यू तो हर भाषा के लिए है मेरे मन में सम्मान, लेकिन हिंदी भाषा का है एक विशेष स्थान। गाँव-कस्बों में मैंने कभी देखा नहीं हिंदी भाषा को कहीं पीछे छूटते, वहाँ तो आज भी हिंदी उतनी ही लोकप्रिय है और उतनी ही बुलंद हर जुबान पर आज हिंदी भाषा बसती है, मेरी कविताओं की भाषा मेरी हिंदी। अब जानिए मेट्रो शहरों का हाल : जो मैंने बोला अपनी बोली हिंदी भाषा में तो लोगो ने कम ही आक़ा, ऐसा लगा आज भी यहाँ है ब्रिटिश का राज और हिंदी को है अपने अस्तित्व की तलाश। हिंदी तो है पूरे भारत की राजभाषा और है मातृभाषा। अब हिंदी को हमे और आगे ले जाना है, इसे आम बोलचाल में लाना है। क्यों न हम हिंदी भाषा को ऊंचे शिखर तक ले जाए और बना दें इसे जन-जन की भाषा, राष्ट्रभाषा। हिंदी से हिन्द और हिन्द से ही हिंदोस्तान, यहां हो हमेशा हिंदी भाषा की जय-जयकार!

हिन्दी की अब होगी जीत

गीता चौबे 'गूँज'

नया सवेरा अब आएगा। हर अवरोधक हट जाएगा।। निशा अमा की जाए बीत। हिन्दी की अब होगी जीत।। दादी-नानी की लोरी-सी, माधवमोहन की बंसी-सी। मिश्री सम कानों में घोले, जब भी कोई हिन्दी बोले। क से किताब, ख से खुशी, ग से गीत गा मेरे मीत, हिन्दी की अब होगी जीत, कर लें जो इससे हम प्रीत। घन-अक्षर ये चहुँ दिश छाएँ, साक्षरता के जल बरसाएँ। दूर-दूर तक अलख जगाएँ, हिन्दी का परचम लहराएँ।। देखो समय न जाए बीत, हिन्दी की अब होगी जीत... अपनी भाषा माँ-सी प्यारी, फिर भी क्यों अपनों की मारी। शब्दकोश समृद्ध हमारा, भरा ज्ञान है जिसमें सारा।। नहीं है हिन्दी दासी क्रीत, हिन्दी की अब होगी जीत... बुरी न कोई भाषा होती, ज्ञान पे आवृत पंक को धोती। संप्रेषण का माध्यम बनती, कल-कल-कल झरना-सी बहती। ओढ़ धूप की चादर हिन्दी, दूर करे भाषा की शीत। हिन्दी की अब होगी जीत, कर लें जो इससे हम प्रीत। हाथ मिलाती हर भाषा से, सबसे भाईचारा रखकर। बढ़े शान दुनिया में जिसकी, इठलाती है ताज पहनकर।। अपनी हिन्दी की है रीत। मक्खन से ज्यों निकला घृत।। हिन्दी की अब होगी जीत, कर लें जो इससे हम प्रीत।

हिन्दी ग़ज़ल

डॉ. कनक लता तिवारी (मुंबई)

इस देश का सम्मान बढ़ाती है ये हिन्दी हमको तो जान से भी सुहाती है ये हिन्दी दुनिया ये सारी गीत जिसके गाती है हरदम वही तो सारे जग की दुलारी है ये हिन्दी राष्ट्र का है स्वाभिमान इसमें ही लिखा सब जाते इस पे बलिहारी है जो ये हिंदी पंत निराला हों या हों मीरा और कबीर सब पर ही जाती वारी वारी है ये हिन्दी रंग के बासंती चोला भगत सिंह का कभी देश प्रेम का पाठ पढ़ाती है ये हिन्दी गुप्त मैथिली के गांवों में बसी है जो मीठे से मीठे गुड सा मिठाती है ये हिन्दी ये भाषा ही सदा साथ कनक के होगी यश की धवल ध्वजा फहराती है ये हिन्दी

मातृभाषा हिंदी

पूनम सिन्हा

जुबां पर पहला आदि मीठा स्वर "मां" हिंदी में ही आया, तभी से बन गया यह हमारी मातृभाषा का सरमाया। व्याकरण की कसौटी पर कसी, छंद अलंकारों से सजी हिंदी, दिल के पोर पोर में रच बस गयी हिंदी। इसकी मिठास दिल मे घुल गयी कुछ ऐसी, घुली हो दूध में मिश्री की डली जैसे। अंग्रेजी ने इसको दबाने की हजार कोशिशे की, पर उसको अंगूठा दिखा अबाध बहता रहा हिंदी का मीठा सोता। लादी गयी भाषा कभी दिल के करीब हो नहीं सकती, हिंदी हमारी मातृभाषा है इसकी जगह कोई ले नहीं सकती। बडी उदार दिल से इसने हर भाषा को अपनाया, तभी तो समृद्ध हो इसका परचम मनोरंजन से विज्ञान तक लहराया। अब तो इसने अहिंदी क्षेत्र से लेकर विदेशों तक पहुंच बना ली है। वह दिन दूर नहीं जब वह राष्ट्रभाषा के पद पर आसीन होगी। हिंदी हमारी शान है, हिंदी हमारा अभिमान है!

हिंदी का विस्तार

सुमेधा पाठक (१४-०९-२५)

नयी ऊर्जा के साथ उर्जस्वित हो रही है हिंदी, कृत्रिम मेधा, चैट, जेमिनी की संगी बन रही है हिंदी। इंटरनेट की दुनिया में दिनोंदिन विस्तार पा रही है हिंदी, बॉलीवुड हॉलीवुड संग थिरकती परचम लहरा रही है हिंदी। आकाशवाणी दूरदर्शन विविध क्षेत्रों में लोकप्रियता की वाहक है हिंदी, बाजारवाद के इस दौर में क्रांति का उद्घोष है हिंदी। सर्वभाषा को आत्मसात किए समरसता की प्रचारक है हिंदी, बहुभाषिक बहुसांस्कृतिक देश की साझी विरासत है हिंदी। प्रेम, समानता, स्वतंत्रता की पोषक जन-मन की भाषा है हिंदी, मानवता की धड़कन, मूल्यों की वाहक भारतीयता की पहचान है हिंदी। भाषाई विवाद की राजनीति से जूझती जुझारू भारतमाता है हिंदी!

राजभाषा हिंदी

कावूरी नागलक्ष्मी 'गगन' (बेंगलुरु)

राजभाषा घोषित हुई है हिंदी, सब भाषाओं से पोषित है हिंदी! इसे राष्ट्रीय एकता का सूत्र मानो, देश की पहचान का मंत्र जानो! सितंबर में हिंदी दिवस आता है, सबको फिर से सजग कराता है! राजभाषा का प्रचार हमें करना है, एकता का बंधन बनाए रखना है! हिंदी है लोकप्रियता से धनी, विश्व में देश की पहचान बनी! सब स्टेशन पट्ट पे दिखाई दी, हर भाषा में झलक सुनाई दी! कभी सुनाई मीरा का भजन, 'गगन' धुलाई तुलसी के चरण! प्रेमचंद के कलम से खूब चली, महादेवी की कविता में ढली! एक पवित्र नदी सी अविरल बहती, सब भाषाओं में जुड़ती रहती!

हिन्दी की वेदना

अनीता पांडा 'अन्वी'

हिन्दी की वेदना उस बेटी की वेदना है, जो जन्म लेती है मायके में, पुष्पित-पल्लवित हो भेज दी जाती है ससुराल में। न होता है मायका अपना, न होता है ससुराल। हिन्दी की वेदना उस गाँव की है वेदना, जहाँ शहरीकरण, विकास के नाम पर नोच लिए गये खेत-खलिहान, बना दिए गये किसान दैनिक मजदूर। शुद्ध हवा और जल पर जम रही प्रदूषण की परत, सोना उगलती धरती बन गयी बंजर। हिन्दी की वेदना उन वृद्धों की है वेदना, जो टकटकी लगाए रात-दिन सुनने के लिए कुछ मीठे बोल, लालसा थोड़े सम्मान की अपने आधुनिक कमाऊ पूत से, वंचित हैं वे आशीर्वाद देने से, घोषित कर दिया गया है उन्हें दकियानूसी पुराने जमाने का। हिन्दी की वेदना भारतीय परम्पराओं की है वेदना—आधुनिकता की चकाचौंध में अंधविश्वास मानकर व्यर्थ हो गईं वे, मात्र संरक्षित हैं संगोष्ठियों और चर्चाओं में, कागज़, कलम और लेखन में। हिन्दी की वेदना है हिन्दी प्रेमियों की वेदना, जो जुड़ा है जड़ों से और शेष है उनमें आदमीयत।

दोहे -- हिन्दी

उषा उमेश गुप्ता "उमा" (१४/९/२०२५)

1-वैज्ञानिक सब वर्ण हैं, उर्जा का आगार। हुआ आरम्भ सृष्टि का, जब गुंजित ओंकार।। 2-अक्षर-अक्षर जोड़ कर, रचते हिंदी शब्द। शब्द-शब्द फिर भाव से, करें ध्वनित नि:शब्द।। 3-बावन अक्षर से सजी, हिंदी है तैयार। ग्यारह स्वर अनमोल है, कर्ण घुले रसधार।। 4-शुद्ध व्याकरण धारिणी, देवनागरी नाम। सजी छंद रस ताल लय, हिंदी है अभिराम।। 5-संस्कृत को जननी कहें, हिंदी है संतान। भारत भाषाएं सभी, मानो बहिन समान।। 6-हिन्दी रग-रग में बसे, भारत की पहचान। हिन्दी में संस्कार सब, है भारत का मान।। 7-हिन्दी में शिक्षा मिले, संस्कारों के साथ। पहली शिक्षा मिल चलें, ले हाथों में हाथ।। 8-हिन्दी है ममतामयी, प्रेम पूर्ण व्यवहार। मानवता की भावना, विश्व प्रेम संस्कार।।

हिंदी मेरे भारत की राजभाषा

मीना गुप्ता

हिंदी है हर पुष्प की अभिलाषा, भारत के हर जन-जन की आशा, आओ लिखो हिंदी की नई परिभाषा।। सूरदास के सूरसागर के छंद है हिंदी, तुलसी की रामचरितमानस की चौपाई है हिंदी, मीरा के प्रेम और भक्ति के पद है हिंदी, रसखान की कृष्ण भक्ति का रस है हिंदी।। रैदास के चंदन पानी-सी हिंदी, सुभद्रा की वीर लक्ष्मीबाई है हिंदी, आचार्य द्विवेदी का अद्भुत साहित्य साज है हिंदी, प्रेमचंद की कहानियों का मर्म है हिंदी।। गुप्त जी की भारत भारती शान है हिंदी, आचार्य मिश्र की त्रिकाल संध्या आरती है हिंदी, प्रसाद जी का छायावादी झरना है हिंदी, तो पंत जी की युगवाणी पुकारती है हिंदी।। महादेवी जी के मधुर दीपक जलाती है हिंदी, तो दिनकर जी की रसवंती बोली है हिंदी, बच्चन जी के अग्निपथ में भारतेंदु के शब्द जोश दिलाती हिंदी।। निराला के परिमल की सुगंध है हिंदी, अज्ञेय की भीष्म साहनी जैसी प्रतिज्ञा है हिंदी, गीतांजलि श्री की रेत की समाधि जैसी समाधि है हिंदी, हर हिंदी प्रेमी के मन की उड़ान है हिंदी।।

हिंदी माँ की गोद

आशा रानी शरण (बेंगलूरू)

माँ की गर्भ में आया जब, धड़कनों ने सुनी हिंदी के आलाप। माँ की हिंदी बोलियाँ, बन गई मेरी वार्तालाप। धरती पर जब जन्म लिया, गूँजी माँ की बोल। पहली वाणी जो बनी, हिंदी की रसघोल। तुतली बोली जब आई, हिंदी ही तो आई। शब्द नहीं थे पूर्ण तब, भावों में वह छाई। रक्त कणों में घुल गई, हिंदी की मधुर रसधार। हृदय स्पंदन में बस गई, मातृभाषा का सार। क्षेत्रीय भाषाओं का हो सम्मान, पर हिंदी विवादों से दूर रहे। इस पर न कोई हो घमासान, हिंदी हर हृदय में रहे। बोलो हिंदी, लिखो हिंदी, व्यवहार में हो हिंदी। राष्ट्रीय एकता बढ़े तब, जब एक सूत्र में बाँधे हिंदी। गर्व करें हम हिंदी पर, हिंदी सबका मान। हिंदी अपनाए जन-जन, इसमें नहीं अपमान। शब्दों में जीवन का सार, संवाद ही शक्ति का संचार। हिंदुस्तान में रहने वालों, हिंदी से कर लो तुम प्यार।

हिंदी दिवस

डॉ. मालती वत्स (मुरादाबाद)

आओ हिंदी दिवस मनायें, हिंदी हमको प्यारी। हिंदी का सम्मान करें, यह सबकी जिम्मेदारी। सहज, सरल भाषा है हिंदी, नहीं कोई दुश्वारी। जनमानस की भाषा हिंदी, जनमानस अपनाए। राजकाज की भाषा हिंदी, राजनीति न भाऐ। मिलकर काम करें हिंदी में, हिंदी सबल बनाएं। जागरूक होंगे जब सब, तब बढ़ेगी भागेदारी। जननी न समझो हिंदी को, समझो सखी सहेली। सब भाषाएं चले साथ में, करती रहें अठखेली। बड़ी बहन सा मान मिले, लगे सभी को प्यारी। आओ सब मिलकर अपनाएं, नहीं कोई मजबूरी। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, नहीं किसी में भेद है। भारत माँ की सब सन्ताने, सबका सुख दुख एक है। कोस कोस पर बदले बोली, चार कोस पर पानी, हम में कोई क्या भेद करेगा, हम हैं हिंदुस्तानी। अपनो का जब मान करें हम, तभी सम्मान बढेगा। गर्व करें हिंदी पर हम, बिन्दी की शान बढ़ेगी ! सारे विश्व में हिंदी की हो जाएगी जय जय कारी।

हिंदी हमारी मातृभाषा

आराध्या आनंद उपाध्याय (कक्षा 9)

वह देश जो अपना बिगड़ गया, दुनिया की माया में बह गया, अपना अस्तित्व खो दिया, अपनी ही संस्कृति भूल गया। हिंदी हमारी मातृभाषा जो है, बन चुकी गँवारों की पहचान है। अंग्रेज़ी को अपनाते हुए लोग समझते अपने को महान हैं। हिंदी खो चुकी है अपना अस्तित्व और सम्मान। अंग्रेजों के प्रभाव से अंग्रेजी बनी प्रधान। हिंदी ही वह भाषा है, जिससे कई भाषाओं का निर्माण हुआ —पंजाबी, भोजपुरी, गुजराती, मराठी सभी इसके परिवार हैं। भूलो न अपनी संस्कृति को, क्योंकि वही सबसे महान है। हर भाषा की अपनी सुंदरता है, पर मेरी हिंदी सबसे प्यारी, निराली और मेरा अभिमान है।

खोई हुई माँ (हिंदी) मिली

विवेकी सिंह

नवीनता पर निद्रा छाई, स्वप्न में उसे दिखाई परछाई। उसके सौंदर्य पर मुग्ध हुई, पर उसे न बात हुई। नवीनता उसके पीछे चली, ढूँढा उसको गली-गली, पर वह मुस्कुराकर न जाने कहाँ चली ? भोर हुई नवीनता उठी, वहाँ उसे देवी मिली, वह उसका परिचय पूछने लगी —देवी कहने लगी : 'मैं हूँ पुरानी, मातृ-भू की वाणी, मेरी पहचान पूरे विश्व में जानी। मैं प्रेम की गंगा हूँ, भाषाओं का संगम हूँ। मुझ में स्वदेश प्रेम का प्रवाह है। मैं भारत की जान हूँ, हर भारतीय की पहचान हूँ। मैं हिंदी हूँ, तेरी माँ हिंदी हूँ।' नवीनता सोचने लगी —'हिंदी भू है, मैं तो पौधा हूँ। हिंदी मेरी मूल है, इसके बिना सब धूल है।' दोनों एक-दूसरे से हिली-मिली, यूँ साथ मुस्कुराकर आगे बढ़ चली।